# गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में लोक कल्याण भावना

**डॉ. ओमवीर सिंह**
हिन्दी विभाग
विवेकानंद कॉलिज, दिल्ली

## सारांशिका

तुलसीदास भक्तिकाल के लोकप्रिय कवि हैं। रामचरितमानस उनकी कालजमयी रचना है जिसमें लोकमंगल की भावना का विधान देखने को मिलता है। इसलिए इनके काव्य में राम गुणशीलता के दर्शन, लोक कल्याण समन्वय की भावना, भक्तिभावना, प्रकृति प्रेम, गुण महिमा, सत्संग, नारी चित्रण, दार्शनिकता और स्वातः सुखाय जैसी भाव भरी काव्य के दर्शन होते हैं। ''तुलसी की काव्य रचना का मूल उद्देश्य लोकमंगल का विधान स्वीकार किया है।''

महाकवि तुलसी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में श्री राम के अनुपमशील गुणों का वर्णन किया है। उनके काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है–राम–भक्ति। राम–भक्ति को ही सिद्ध करने के लिए उन्होंने राम कथा को आधार बनाकर अपने काव्य–रचना की है। तुलसीदास ने शील, शक्ति और सौन्दर्य के भण्डार मर्यादा पुरुषोत्तम राम उनके ईष्ट देव हैं। तुलसी अपना सम्पूर्ण जीवन राय के गुण–गान में लगा दिया। इसलिए वह कहते हैं कि जो श्री राम–सीता के भक्त नहीं, उनका अपने जीवन में निःसकोच त्याग कर देना चाहिए क्योंकि वह शत्रु के समान है।

**मुख्य शब्द** : राम भक्ति, भक्ति भावना, अन्तःकरण सुख, जनहित।

### प्रस्तावना

तुलसीदास भक्तिकाल के लोकप्रिय कवि हैं। रामचरितमानस उनकी कालजमयी रचना है जिसमें लोकमंगल की भावना का विधान देखने को मिलता है। इसलिए इनके काव्य में राम गुणशीलता के दर्शन, लोक कल्याण समन्वय की भावना, भक्तिभावना, प्रकृति प्रेम, गुण महिमा, सत्संग, नारी चित्रण, दार्शनिकता और स्वातः सुखाय जैसी भाव भरी काव्य के दर्शन होते हैं। ''तुलसी की काव्य रचना का मूल उद्देश्य लोकमंगल का विधान स्वीकार किया है।''

महाकवि तुलसी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में श्री राम के अनुपमशील गुणों का वर्णन किया है। उनके काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है–राम–भक्ति। राम–भक्ति को ही सिद्ध करने के लिए उन्होंने राम कथा को आधार बनाकर अपने काव्य–रचना की है। तुलसीदास ने शील, शक्ति और सौन्दर्य के भण्डार मर्यादा पुरुषोत्तम राम उनके ईष्ट देव हैं। तुलसी अपना सम्पूर्ण जीवन राय के गुण–गान में लगा दिया। इसलिए वह कहते हैं कि जो श्री राम–सीता के भक्त नहीं, उनका अपने जीवन में निःसकोच त्याग कर देना चाहिए क्योंकि वह शत्रु के समान है।

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि बैरी सम जदपित परम सनेही।

तुलसी को मार्मिक स्थलों की पहचान है। इसीलिए राम गुण–गान और भक्ति–भाव अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने अपने काव्य में बीच–बीच में अनेक मार्मिक स्थल जोड़ दिए हैं। जैसे–कैकेयी का वरदान मांगना और राम का वन जाना, भरत का ननिहाल में होना और आने पर चित्रकूट में राम से मिलने जाना, राम का सामान्य पथिक रूप में अयोध्या का त्याग, केवट संवाद, शबरी का सच्चा प्रेम, सीता–हरण, राम का विरह, लक्ष्मण की मूर्छा, राम का विलाप, हनुमान का पहाड़ उठाकर लाना आदि असंख्य ऐसे प्रसंग हैं जिन पर सभी सम्मोहित हो जाते हैं। ऐसे स्थलों पर तुलसी ठहरते हुए चलते हैं क्योंकि एक–एक स्थल की भावना से परिचित कराते हैं जिनसे मानव परिचित होता है।

तुलसी ने सम्पूर्ण काव्य 'स्वान्तः सुखाय' अतः अर्थात् अपने अन्तःकरण के सुख के लिए लिखा है। श्री राम के शील गुण–गान से उन्हें आत्मिक सुख–शान्ति की प्राप्ति होती है। इसीलिए 'श्री रामचरितमानस' के प्रारम्भ में उन्होंने घोषण कर स्पष्ट शब्दों में कहा है:–

'स्वान्तःसुखाय तुलसी रघु नाथ गाथा।'

तुलसीदास अपने प्रभु राम की गाथा को कहकर अपने जीवन को श्रेष्ठ मान रहे हैं। वह पूरे लोक कल्याण की भावना से आत्मसात् कर रहे हैं। तुलसी की शिव अराधना भी श्रेष्ठ है। इन्होंने अपने अन्तःकरण के सुख के लिए रामचरितमानस को काव्य रचा था। उनका यह रामचरितमानस काव्य लोक–कल्याण के भाव से भरा हुआ है। 'स्वान्तः सुखाय' होने पर भी 'परजनहिताय' का भाव इसमें अन्तर्निहित है। उन्होंने अपने काव्य में अनेक नीति, रीति तथा आदर्श तत्वों को काव्य में प्रदर्शित किया है जिनका अध्ययन एवं चिन्तन–मनन सभी मानव जाति का मंगल करने वाला है। उन्होंने राजा–प्रजा, पिता–पुत्र, माता–पिता, पति–पत्नी, स्वामी–सेवक आदि के पारस्परिक एवं सामाजिक सम्बन्धों का चित्रण करते हुए समाज के लिए आदर्श–आचरण की कल्पना की है जो सर्वाधिक उत्तम आचरण है। तुलसी के राम 'मंगल भवन अमंगलहारी' हैं जो सभी का कल्याण करने वाले हैं। उन्होंने शबरी, गीध, अजामिल आदि न जाने कितने पापियों का उद्धार किया है। इसलिए राम का लोक रक्षक और लोक रंजक रुप वर्णन करके तुलसी ने अपने लोक–कल्याण के भाव को मुखर किया है। उन्होंने उसी काव्य को लोक मानस के लिए उपयोगी माना है जिसमें गंगा की भाँति जन–मानस को पवित्र करने की क्षमता हो और सम्पूर्ण मानव जाति कल्याण करे–

कीरति भणिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहिं हित होई।

इस सम्बन्ध में डॉ. शशि कुमार ने स्पष्ट कहा है कि तुलसीदास ने जनमानस के उत्थान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया है।''

तुलसी के काव्य समन्वय की भरमार है। उन्होंने सगुण–निर्गुण, ज्ञान–भक्ति, शैव–वैष्णव और विभिन्न मतों एवं सम्प्रदायों में समन्वय किया है। निर्गुण–सगुण को एक मानते हुए उन्होंने कहा–

अगुनहिं सगुनहिं नहिं कुछ भेदा।
गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।

इसी प्रकार ज्ञान और शक्ति को एक मानते हुए कहते हैं–

ज्ञानहिं भगतहिं नहिं कुछ भेदा।
उभय हरहिं भव सम्भव खेदा।

तुलसी ने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य–शैलियों में भी समन्वय स्थापित किया। इसलिए तुलसीदास ने राम भक्ति में प्रेरित होकर अपने राम ग्रन्थों में राम कथा उनके भक्तों का जो चरित्र प्रस्तुत किया है, वह मानवता के सर्वोत्तम आदर्शों की स्थापना करता है।

तुलसी के काव्य में भक्ति के अनेक रुप देखने को मिलते हैं, जैसे–ज्ञान–भक्ति, दास्य–भक्ति, नवधा–भक्ति, वास्य–भक्ति, माधुर्य भाव की भक्ति, भायप–भक्ति, गुरु–भक्ति आदि। इन सब में तुलसी का दास्य भाव ही प्रमुख रहा है। उन्होंने स्वयं को श्री राम का दास कहा है। इसलिए वह राम को बहुत बड़ा और स्वयं को दीन–हीन एवं महा–पतित मानते हैं। अपने उद्धार के लिए वह प्रभु राम की भक्ति की ही बारम्बार प्रार्थना करते हुए कहते हैं–

माँगत तुलसीदास कर जोरे,
बसहु रामसिय अन्तर मोरे।

अतः तुलसी को अपने राम पर पूर्ण विश्वास है क्योंकि उनकी भक्ति चातक जैसी है। उनकी भक्ति में दैन्य, नम्रता, उदारता, लघुता, आत्म–निवेदन और समर्पण आदि भाव प्रमुख हैं। प्रभु की महानता और अपनी लघुता का उन्होंने बारम्बार कहा किया है। इसलिए विनय–पत्रिका भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण दिखलाई पड़ता है।

तुलसी ने प्रकृति के अनेक मनोहारी दृश्य उपस्थित किए हैं। उनका प्रकृति–चित्रण मुख्यतः आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण, उपदेशात्मक एवं आलंकारिक रूप में हुआ है। उन्होंने सभी ऋतुओं का सुन्दर वर्णन किया है। इसलिए सीता हरण के पश्चात् अकेले राम गरजते बादलों से भयभीत हो रहे हैं। यहाँ प्रकृति का उद्दीपन रूप दर्शनीय है जो कहीं भी अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है :–

गन घमण्ड नभ गरजत धोरा।
प्रियाहीन डरपत मन मोरा।।

तुलसी रस सिद्ध कवि हैं। इसलिए इन्होंने अपने काव्य में अनेक रसों की प्रस्तुति की है। उन्होंने सभी रसों की योजना 'श्री रामचरितमानस' में की है। यद्यपि उनके काव्य में शान्त रस प्रमुख रहा है परन्तु श्रृंगार की अद्भुत छटा भी प्रशंसनीय है। श्री राम–सीता के सौन्दर्य, मिलन एवं विरह के प्रसंगों में श्रृंगार का सर्वोत्तम रुप देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त करुण, रौद्र, वीभत्स, भयानक, वीर, अद्भुत एवं हास्य रसों का भी यत्र–तत्र प्रयोग किया गया है सीता हरण के पश्चात् वियोग दृष्टिगत होता है। दुःखी राम, उन्मत्त होकर पशु, पक्षी और भौंरों से सीता का पता पूछते हैं। इतना ही नहीं मनुष्यों की भाँति विरह से पीड़ित दिखलाई पड़ रहे हैं–

हे खग मृग ! हे मधु कर स्त्रोनी।
तुम देखी सीता मृग नैनी।।

राम–वन गमन के समय करुण–रस, लक्ष्मण–परशु राम संवाद में रौद्र और वीर रस देखने को मिलता है। इसलिए सुन्दर काण्ड में नवों रस देखे जा सकते हैं और लंका काण्ड में वीर, रौद्र, वीभत्स, भयानक एवं अद्भुत रस दिखलाई पड़ते हैं जिससे मनोरम दृश्य देखने को मिलते हैं।

तुलसी ने गुरू की महत्ता सर्वोपरि मानी है क्योंकि गुरु बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए 'श्री रामचरितमानस' के प्रारम्भ में उन्होंने गुरु की वन्दना की है और महत्व को स्वीकार कर तभी तो कहा है :–

बन्दउँ गुरु पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।

सत्संगति का महत्व प्रतिपादन करते हुए उन्होंने बताया कि बिना सत्संग के विवेक (ज्ञान) प्राप्त नहीं हो सकता और विवेक के बिना प्रभु की प्राप्ति असम्भव है क्योंकि जब तक विवेक सोता रहेगा तब तक प्रभु राम की कृपा नहीं होगी।

बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

तुलसी को कुछ विद्वानों ने नारी–निन्दक कहा है क्योंकि तुलसी ने 'श्री रामचरितमानस' के 'सुन्दर काण्ड' में लिखा है–'ढोल गंवार सूद्र पसु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी' नारी को ताड़ना का अधिकारी बताया है। इसलिए कीट समालोचक तुलसी को नारी विरोधी सिद्ध करते हैं। सत्यता यह है कि तुलसी ने कर्त्तव्यहीन, चरित्रहीन, धर्महीन, कुमार्गगामी और विलासिनी नारी की निन्दा की है अन्यथा उन्होंने सर्वत्र पार्वती, अनुसूया, कौशल्या, सीता आदि के माध्यम से नारी का आदर्श एवं शील रूप ही चित्रित किया है। अतः पतिव्रता और भक्त नारियाँ तुलसी के लिए पूज्य हैं, तभी तो कहते हैं–

हिय हरषे मुनि वचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास।
चले भवानी नाइ सिर, गये हिमाचल पास।।

तुलसी ने अपने काव्य में जीव, जगत, वृक्ष, माया आदि पर भी विचार किया है। तुलसी जीव को ईश्वर का अंश मानते हुए कहते हैं–'ईश्वर अंश जीव अविनासी।' इन्होंने बताया कि जब जीव माया के जाल में फँस जाता है तब वह अपने सच्चे स्वरुप को भूल जाता है। इसलिए इन्होंने माया की निन्दा की है और जीव की स्थिति को स्पष्ट किया है–

सो माया बस भयेउ गोंसाई।
बन्ध्यो कीट मर्कट की नाई।।

तुलसी सृष्टि का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इसे कोई सत्य मानता है, कोई झूठ किन्तु कुछ लोग दोनों मतों को स्वीकार करते हैं परन्तु जो इन भ्रमों को त्याग देता है, वही व्यक्ति स्वयं को पहचान सकता है और भ्रम की स्थिति से छूट जाता है। यथा–

कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल, प्रबल कोउ मानै।
तुलसीदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहिचानै।।

तुलसी के काव्य का भाव–पक्ष अत्यन्त सशक्त एवं प्रौढ़ है। इसलिए उनके काव्य में लोक कल्याण भावना का समावेश है। उन्होंने मानव प्रकृति के विविध रुपों का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। वस्तुतः भवित, प्रकृति, नीति–रीति, नारी, सत्संग और गुरु–महिमा पर तुलसी ने प्रकाश डाला है। इन्होंने अपने आदर्श भावों की अभिव्यक्ति की है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :**


- डॉ. नामदेव – मध्यकाल और आधुनिककाल – पृ. सं. 34
- डॉ. शशि शेखर – हिन्दी भाषा और साहित्य – पृ. सं. 21
- तुलसीदास – रामचरितमानस
- डॉ. शशि शेखर – हिन्दी भाषा और साहित्य – पृ. सं. 57